अपनी लय, तुक और भावों से रची एक कविता सहज ही मन को आकर्षित कर लेती है। कविता के माध्यम से भाषा शिक्षण बखूबी किया जा सकता है। कविता में यदि बालमन का चित्रण हो, तो बच्चे उसमें बहुत आनंद लेते हैं। कक्षा में कविता पढ़ाना भी एक कला है। कोई भी कविता अपने उद्देश्य में तभी सफल होती है जब शिक्षक उसे सही रूप में बच्चों के सामने प्रस्तुत करें।

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित तीसरी कक्षा की हिंदी की पाठ्यपुस्तक रिमझिम-3 में प्रकाशित कविता 'कक्कू' को पढ़ाने का एक शिक्षिका का अनुभव यहाँ दिया जा रहा है।

ऐसे पढ़ाई कविता 'कक्कू'

रणजीत कौर*

बच्चे के लिए प्रत्येक नया अनुभव अजूबे से कम नहीं है। बच्चे में प्रत्येक नयी चीज़ के लिए एक प्रकार का कौतूहल और उत्साह होता है। यही उत्साह उसमें नयी कक्षा में प्रवेश के बाद नयी वर्दी, नए कक्षा कमरे, नए बैग और नयी किताबों को लेकर होता है। अधिकांश बच्चे नयी किताबें खरीदने के तुरंत बाद उन्हें आगे-पीछे से देखना, उनके चित्रों को देखना और किताब की विषयवस्तु को पढ़ना आरंभ कर देते हैं। भाषा की किताब में से वे कई कविताओं और कहानियों को तथा उनके किसी खास संवाद को याद कर लेते हैं। ऐसा ही एक अनुभव मुझे हुआ। शिक्षक के रूप में मेरे मन में भी नयी किताब को लेकर कुछ आशंकाएँ और कुछ संभावनाएँ थीं। अध्यापक भी तो एक विद्यार्थी ही है और यदि वह बच्चों के स्तर तक जाकर उस जिज्ञासा को अनुभव करेगा तभी वह बच्चे की जिज्ञासाओं को शांत करके उन्हें उचित प्रकार से शिक्षा दे सकता है। **'रिमझिम-3'** की कविता **'कक्कू'** को पढ़ाने में

* शिक्षिका, राजकीय कन्या उच्चतर विद्यालय, सैक्टर-18, चंडीगढ़

मुझे एक नया अनुभव प्राप्त हुआ जिसने मेरे आगे के शिक्षण को सुलभ कर दिया। मैं आप सभी के साथ अपने अनुभव को बाँटना चाहती हूँ।

- तीसरी कक्षा में प्रवेश के कुछ दिनों बाद ही बच्चों को **रिमझिम-3** का शिक्षण शुरू किया गया। **रिमझिम-3** के विषय में जब मैंने बच्चों से पूछा किताब कैसी है? सुंदर है? कुछ पढ़ा? तब अधिकांश बच्चों का जवाब था बड़ी अच्छी है। हमने 'कक्कू', 'मन करता है' और 'क्योंजी मल और कैसे कैसलिया' पढ़ लिए हैं। कई बच्चे उसी समय कविता के अंश पढ़ने लगे—

  नाम है उसका कक्कू।
  कक्कू माने कोयल होता
  लेकिन यह तो दिन भर रोता
  इसीलिए हम इसे चिढ़ाते
  कहते इसको सक्कू
  नाम है उसका कक्कू।

और इसी तरह मन करता है कविता के अंश पढ़ने लगे—

मन करता है कोयल बनकर
मीठे-मीठे बोल सुनाऊँ।
मन करता है चिड़िया बनकर
चीं-चीं-चूँ-चूँ शोर मचाऊँ

मैंने बच्चों को यह कविता पढ़ाई। इस कविता को पढ़ाने के दौरान मुझे लगा कि बच्चों को ये कविताएँ अपने बालमन से जुड़ी लगीं तभी तो उन्होंने इसे याद कर लिया।

कक्कू कविता के वाचन और आंगिक क्रियाओं के द्वारा कोयल के पंख, कोयल की मीठी वाणी, रोने का आंगिक भाव, गुस्सा होने और मुँह फुलाने की आंगिक अभिव्यक्ति ने जहाँ बच्चों को भावनात्मक रूप से जोड़ा वहीं उनके परिवेश से भी। बच्चे अनायास ही कोयल की कल्पना कर सके। इस तरह इन पंक्तियों ने उनकी कल्पना को नए पंख दिए।

वाचन के बाद ही जब पूछा गया कि कक्कू का क्या अर्थ है भक्कू का क्या और झक्कू का क्या? तो बच्चों ने स्वतंत्र अभिव्यक्ति द्वारा अर्थ स्पष्ट कर दिए। कक्कू, भक्कू, झक्कू, सक्कू शब्दों ने उनके तार्किक चिंतन और अभिव्यक्ति को मार्गदर्शित किया।

कविता के वाचन के अगले दिन ही कक्षा के कुछ बच्चे शिकायत करने लगे कि ये मुझे सक्कू कह रहा है। वो मेरा नाम भक्कू रख रहा है। अर्थात बच्चों ने सक्कू, भक्कू, झक्कू शब्दों के संबंध में जो ज्ञान अर्जित किया था, उसे वे अपने जीवन में लागू कर चुके थे। पर शिक्षक होने के नाते मेरा दायित्व इस परिस्थिति में सकारात्मक शिक्षण का था। अतः सबसे पहले पूछा कि जब तुम्हें कोई चिढ़ाता है, तो तुम्हें कैसा लगता है? 'अच्छा नहीं लगता या थप्पड़ मारने को दिल करता है' यह छात्रों का उत्तर था, तो मैंने उन्हें समझाया कि जब तुम्हें स्वयं अच्छा नहीं लगता तो क्या दूसरों को लगता है? इसी तरह मैंने बच्चों को समझाया कि कविता में भी यही बताया गया है कि यदि सारा दिन गुस्सा रहोगे, रोते रहोगे, चिढ़ोगे या झगड़ा करोगे तो लोग तुम्हें पसंद नहीं करेंगे और चिढ़ाएँगे। इस प्रकार यह कविता सकारात्मक शिक्षण और मनोवेगों के शिक्षण में बड़ी सहायक हो रही है।

अभ्यास के पहले प्रश्न– 'तुम्हारे नाम का मतलब' में बच्चों को पहले स्वयं ढूँढ़ने फिर अपने माता-पिता से पूछने को कहा गया। अगले दिन सुबह ही कुछ अभिभावकों ने कहा कि नाम का अर्थ हमें पता नहीं और कुछ ने कहा कि ये बच्चों को क्या सिखा रहे हो। घर में ये एक दूसरे को चिढ़ाते हैं, नाम बिगाड़ते हैं। मैंने अभिभावकों को समझाया कि चाहे नाम बिगाड़ते हैं, कुछ बोलते तो हैं और मैं इन्हें समझा दूँगी कि चिढ़ाना नहीं है। दूसरी बात यदि नाम का अर्थ पूछते हैं तो क्या गलत है? आपने बच्चे का नाम उसके रंग, रूप, बच्चों में उसके क्रम या अपनी धार्मिक भावना को ध्यान में रखकर रखा होगा। यदि आपको अर्थ ज्ञात है तो बता दें अन्यथा मैं बता दूँगी। कक्षा के कई छात्रों के नामों यथा 'गुरविंदर, शिवम्, हिमांशी, समरजीत, शुब्बाजी' के अर्थ मुझे भी खोजने पर ही मिले। इस एक प्रश्न ने ही जहाँ बच्चों को खोज करने और ढूँढ़ने को प्रोत्साहित किया वहीं मुझे भी स्वाध्याय के लिए प्रेरित किया। इसी तरह यह प्रश्न बच्चों को भी चिंतन और स्वाध्याय के लिए प्रेरित करता है।

'तुम्हारे कितने नाम' और 'सोचो तो' प्रश्नों ने जहाँ बच्चों के अंतर्मन को उद्वेलित किया वहीं सकारात्मक शिक्षण भी दिया। बच्चों ने इस संपूर्ण प्रश्न के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति को, अपने परिवेश को, अपने विद्यालयी अनुभव को नया आयाम दिया। बच्चों ने नए शब्दों का सृजन किया जिससे उनकी भाषा विकसित हुई और तार्किक चिंतन भी बढ़ा।

कई बार सहशिक्षकों का विचार आया कि हिंदी तो बच्चे को आती है, इस पर अधिक ज़ोर न दें या ये सारा दिन हिंदी की कविताएँ खोल कर बैठे रहते हैं। इसके पीछे तथ्य यह है कि जो भी विषयवस्तु बच्चे की रुचि, कल्पना, सृजनात्मक विकास से जुड़ी है और अच्छी तरह परोसी गई है वही बच्चों को बाँध लेती है। आप भी बच्चों को सहभागी बनाकर, आनंद लेकर विभिन्न प्रकार की गतिविधियों से पढ़ाओ तो वे आपकी किताब भी ऐसे ही खोल कर बैठेंगे। 'कक्कू' कविता ने बच्चों के पहले अनुभव को ही सुखद बना दिया, जिससे आगे

का कार्य भी सरल हो गया क्योंकि 'यदि आप पहला कदम आत्मविश्वास के साथ रख लें, तो आधा रास्ता स्वयं तय हो गया।'

इस कविता के वाचन ने जहाँ बच्चों को कविता का आनंद लेने के लिए उत्साहित किया वहीं अपने साथियों के बारे में राय बनाने के लिए भी प्रेरित किया। इसके एक अन्य प्रश्न में 4 बच्चों के नाम लिखने हैं और उन्हें वर्णमाला के अक्षरों के क्रम से लगाना है। अधिकांश छात्रों ने अपने मित्रों, सहेलियों के नाम लिखे और चित्र में बनी गाड़ी के पहले डिब्बे में अपने सबसे प्रिय मित्र का ही नाम लिखा। सबसे पहले लिखे गए नाम के बारे में पूछने पर मुझे यह ज्ञात हुआ। छात्र प्रत्येक चीज़ को अपने जीवन के साथ जोड़ना चाहते हैं और इस पुस्तक में यह प्रयास पग-पग पर है।

बच्चों ने कविता में कही बातों को जैस– चिढ़ाने, मुँह फुलाकर बैठने, रोने आदि भावों का आंगिक अभिनय किया तो उनके कौशल को देखकर मैं स्वयं दंग थी कि इनमें अपने हाव-भावों की कितनी समझ है। इसी के साथ मैंने उन्हें दूसरों के हाव-भाव पढ़ने और नकारात्मक भाव प्रदर्शन के प्रति भी सचेत किया।

इस प्रकार **कक्कू** कविता पढ़ना और पढ़ाना स्वयं में एक अनूठा अनुभव है। इस कविता ने मुझे भी मेरे बचपन के दिनों, प्यार के नामों और चिढ़ाने वाले नामों का स्मरण करा दिया। इस कविता ने जहाँ मुझे चिंतन और स्वाध्याय के लिए प्रेरित किया वहीं सकारात्मक शिक्षण की विधि खोजने के लिए भी प्रेरित किया। इस कविता का भरपूर आनंद लेते हुए मैंने इसे बच्चों तक प्रभावशाली ढंग से पहुँचाने का प्रयास किया है। वास्तव में ही यह एक अनूठा अनुभव है जो पुस्तक के आगामी पृष्ठों में भी मेरा मार्गदर्शन करेगा।

***